कविता

मज़दूर ही महान है

– महेश कुमार वर्मा

मज़दूर ही महान है,
जानता यही सब काम है।
हर प्राणियों का प्राण है,
सभी देशों का अभिमान है।।
मज़दूर ही महान है
जिस देश में मज़दूर का सम्मान है,
उस देश का जग में बढ़ता मान है।
देखो पूर्वी देश जापान है,
जहां मज़दूरों का सम्मान है।।
मज़दूर ही महान है
मज़दूरी में लड़कियों औरतों का
भी कम नहीं योगदान है,
कहीं रोपती तो कहीं
काटती दिखती धान है
ऑफिस और फैक्टरियों में भी
करती दिखती काम है,
कभी घरों को सजाती,
कभी तोड़ती चाय ढलान है।।
मज़दूर ही महान है
यही वह देश का जवान है,
जो देश पर देता अपनी जान है।
यही देश का सबसे
बड़ा पहलवान है,
जिसकी पहचान प्यारा
लाल निशान है।।
मज़दूर ही महान है
मज़दूर एक तपस्वी के समान है,
काम इनके तपस्या के समान है।
नहीं इनके पास ईर्ष्या का निशान है,
सबकी सुलझाता समस्या
यही इसका काम है।।
मज़दूर ही महान है
घरों में दिखता जितना भी सामान है,
यह इन्हीं के बनाये गये निशान हैं।
यही वह हल चलाने
वाला भी किसान है,चाहे कह लो इसे
हर युगों का भगवान है।।
मज़दूर ही महान है
कोई टेलिफ़ोन बनाता
कोई बनाता जलयान है,
कोई उन घरों को भी बनाता है
जो दिखता आलीशान है।
ये सभी बासनों और वाहनों को भी
बनाता जिससे चलता सारा जहान है,
यह उन सामान को भी बनाता है
जो उड़ता कभी आसमान है।
मज़दूर ही महान है
मज़दूर एक औषधि के समान है,
जो इच्छा रूपी घाव को
भरने का करता काम है।
मज़दूर एक ऐसा भी अनुसंधान है,
जिसके बिना संभव नहीं कोई काम है।
मज़दूर ही महान है

लिंग्याज़ विश्व-विद्यालय: नकली इन्जीनियर पैदा करने का कारख़ाना

फरीदाबाद (म.मो.) यह औद्योगिक शहर 1960 से विकसित हो रहा है। पर 1996 के बाद यह शहर शिक्षा व्यापार के केन्द्र के रूप में भी उभरा। 1997 में यहां पर मानव रचना लिंग्याज़ यूनिवर्सिटी खूली और इन्होंने दिन दोगुना और रात-चौगुना मुनाफ़ा वसूल कर विशालकाय रूप धारण कर लिया। इससे प्रेरित होकर यहां 25 और नये शिक्षा व्यापारी इंजीनियरिंग शिक्षा की दुकानें खोल कर बैठ गये। शिक्षा की इन दुकानों में छात्रों की फ़ीस वसूलने में चुस्ती और शिक्षकों को वेतन देने में सुस्ती एक आम परिघटना है।

इन्ही दुकानों में डूबता हुआ टाइटेनिक जहाज लिंग्याज़ यूनिवर्सिटी है। इस यूनिवर्सिटी को 2009 में ही फ़र्जी यूनिवर्सिटी का दर्जा मिला था। इसके बाद इसके बुरे दिन शुरू हुए।

इसके मालिक डॉ. पिचेश्वर गड्डे ने जमकर पुराने नामी प्रोफ़ेसरों की छंटनी की और अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारी। इसका दुष्प्रभाव यह पड़ा कि शिक्षा का स्तर रसातल तक गिरा और यहां पर आनेवाले छात्रों में भी असंतुष्टि बढ़ी और यहां पर छात्रों की संख्या घटती गई। यहां पर प्लेसमेंट भी घटा। यह भी छात्रों की असंतुष्टि का मुख्य कारण रहा। फ़िर डॉ. गड्डे ने अप्रैल 2011 में एक साथ 65 प्रोफ़ेसरों की छटनी की। इससे मार्केट में इसका नाम इतना कलंकित हुआ कि यहां पर नये टीचर भर्ती होने से परहेज करने लगे। यह स्थिति छात्रों के लिये भी असहनीय थी और आज भी है। 6 महिने के सेमेस्टर के दौरान यहां पर एक विषय के तीन-तीन चार-चार शिक्षक तक बदल दिये जाते हैं या टीचर खुद ही छोड़-छोड़ कर चले जाते हैं।

डॉ. गड्डे ने यहां पर नये श्रम कानूनों के आने से पहले ही अघोषित रूप से इन्हें लागू किया है। यहां पर पिचेश्वर की मर्जी बिना पत्ता तक नहीं हिलता है। यहां पर मालिकान किसी को भी नौकरी से निकालने के लिये एक महिने का नोटिस देने की कानूनी अनिवार्यता निभाने की भी जरूरत नहीं समझते; जिसको जब जी चाहा काम से बाहर का रास्ता दिखा दिया। काम से बाहर निकालते वक्त कर्मचारी का बकाया वेतन आदि भी नहीं दिया जाता। इसके लिये भी उसे इतने चक्कर लगवाये जाते हैं कि वह बकाया छोड़ देना ही बेहतर समझता है।

उसके बाद फ़िर से नये मुर्गे तलाशने के लिये टाईम्स ऑफ इन्डिया में विज्ञापन दिये जाते हैं। फिर से चयन कमेटी बैठती है। ये सभी नये मुर्गों को छांट कर अलग करते हैं और ये नये रंगरूट गड्डे की दुकान पर प्रोफ़ेसरी के नाम पर दिहाड़ी करते हैं और उस दिहाड़ी का भुगतान भी मैनेजमेंट किस्तों में करती है। जब तक किसी प्रोफ़सर को यह पता चले कि उसका वेतन कितना बनता है किस हिसाब से बनता है, तब तक बहुत देर हो जाती है और फ़िर आवेदन देने के बावजूद भी कहीं कोई सुनवाई नहीं होती है। यहां पर चलते-चलते आपको बता दें कि मैकेनिकल डिपार्टमेंट के शिक्षक जिनकी तनख्वाह 37000 मात्र तय की गई और उन्हें फ़ोन पर सूचित किया गया कि अब उनका वेतन घटाकर 30035 कर दिया गया है। जब तक कोई फ़ैसला होता तब तक उस शिक्षक को बाकी शिक्षकों के साथ बाहर का रास्ता दिखा दिया जाता है।

यह विश्वविद्यालय छात्रों में शिक्षा के नाम पर सालाना 1 लाख 57 हज़ार रुपया वसूल रहा है। इतनी महंगी फीस होने के बावजूद प्लेसमेंट की कोई गारंटी छात्रों को नहीं दी जाती है। इसी जुलाई के पहले हफ्ते में डॉ. गड्डे के विश्विद्यालय का यू जी सी (विश्व विद्यालय अनुदान आयोग) ने निरीक्षण किया। यू जी सी की टीम ने इस विश्वविद्यालय में आने तक की जहमत नहीं उठाई और फ़रीदाबाद में लिंग्याज़ के हेड ऑफिस में बैठ कर निरीक्षण की औपचारिकता पूरी कर दी।

डॉ. गड्डे के विश्वविद्यालय पर टैक्स बकाया और उसमें हेर-फेर के भी आरोप आये। जुलाई के दूसरे हफ्ते में ही इन्कमटैक्स की टीम ने एक साथ लिंग्याज़ की सभी संस्थाओं के ऊपर छापा मारा और करोड़ों की हेराफेरी का पता लगाया। डॉ. गड्डे ने ईमानदारी से एक करोड़ रुपये की घूस देकर अपने विश्वविद्यालय के लिये क्लीन चिट हासिल की।

इस तरह के नकली विश्वविद्यालयों द्वारा पैदा किये गये ईंजीनियर किस काम आ सकते हैं? जाहिर है इनकी इसी 'गुणवत्ता' के चलते कोई कम्पनी इन्हें प्लेसमेंट कैसे दे सकती है? ऐसे में बरबस मैट्रो मैन ई श्रीधरण का वह जुमला- कि भारत में पैदा होने वाले 100 में से 20 ईंजीनियर काम के होते हैं, 20 को प्रशिक्षण के बाद काम का बनाया जा सकता है शेष 60 किसी काम के नहीं होते- याद आ जाता है।

प्रथम विश्व युद्ध के सौ साल

आज से सौ साल पहले 28 जुलाई 1914 से प्रथम विश्वयुद्ध की शुरूआत हुई थी आर्थिक संकट से घिरे लुटेरे साम्राज्यवादी मुल्कों द्वारा कमजोर मुल्कों के प्राकृतिक संसाधानों व श्रम शक्ति की लूट एवम् बाजारों पर कब्जे के लिए लड़े गए इस युद्ध में एक करोड़ से अधिक लोग मारे गए थे और करोड़ों अपाहिज, बेघरबार और बेसहारा हो गए थे। इस युद्ध की विभीषिका को सबसे अधिक औरतों एवं बच्चों ने भोगा था।

प्रथम विश्व युद्ध (1914-1918) की समाप्ति को करीब 20 वर्ष ही हुए थे कि दूसरे विश्व युद्ध (1939-1945) की शुरूआत हो गई। इस युद्ध में हुई तबाही-बर्बादी प्रथम विश्व युद्ध से भी ज्यादा थी। द्वितीय विश्व युद्ध के अंत में अमेरिका ने जापान के हिरोशिमा एवं नागासाकी शहरों पर परमाणु हमला कर इन शहरों को जमींदोज कर दिया था। इस परमाणु हमले के जख्म वहां के निवासियों की पीढ़ियों के शरीर और मन पर आज भी कायम हैं। प्रथम विश्व युद्ध की भांति द्वितीय विश्व युद्ध के लिये भी कुछ प्रमुख साम्राज्यवादी मुल्कों की अपने साम्राज्य के विस्तार की लालसा ही जिम्मेदार थी।

आज प्रथम विश्व युद्ध (1914-1918) के सौ साल पूरे होने पर इन दोनों विश्व युद्धों की विभीषिका को याद करना बेहद जरूरी है। इन अन्यायपूर्ण युद्धों के लिए जिम्मेदार साम्राज्यवादी शक्तियां आज भी सारी दुनिया में तबाही-बर्बादी का खेल खेल रही है। इराक, अफगानिस्तान, लीबिया, सोमालिया, यूक्रेन..... इत्यादि मुल्कों की तबाही का कारण ये साम्राज्यवादी शक्तियां ही हैं। ये लुटेरी साम्राज्यवादी शक्तियां तीसरे विश्व युद्ध की शुरूआत का कारण भी बन सकती है। यदि ऐसा हुआ तो तीसरा विश्व युद्ध, पहले दो विश्व युद्धों से भी ज्यादा तबाही-बर्बादी लेकर आयेगा। लेकिन यहां भी गौरतलब है कि प्रथम विश्वयुद्ध ने जहां मज़दूर वर्ग के नेतृत्व में रुस की महान अक्टूबर क्रांति को जन्म दिया था वहीं द्वितीय विश्व युद्ध ने पूर्वी यूरोप एवं चीन में मूज़दूर वर्ग की क्रांतिकारी सत्ताओं के साथ विश्व में समाजवादी खेमे का निर्माण किया था, ऐसे में यदि तीसरा विश्व युद्ध छिड़ता है तो कहा जा सकता है कि वह क्रांतियों को जन्म देगा अथवा क्रांतियां तीसरे विश्व युद्ध को रोक देंगी।

प्रथम विश्व युद्ध के दौरान सम्पन्न हुई रूस की महान अक्टूबर क्रांति न सिर्फ बीसवीं सदी के इतिहास की अपितु पूरे मानव इतिहास की सर्वाधिक महत्वपूर्ण घटनाओं में से एक है। इस क्रांति के जरिये इतिहास का सबसे शोषित वर्ग-मज़दूर वर्ग, पूंजीपति वर्ग से सत्ता छीन कर इतिहास के रंगमंच पर मानवता के मुक्तिदाता के रूप में प्रकट हुआ। रूस की समाजवादी क्रांति ने बीसवीं सदी के इतिहास को बदल डाला। बीसवीं सदी की सभी क्रांतियों एवं राष्ट्रीय मुक्ति संघर्षों ने महान अक्टूबर क्रांति से प्रेरणा हासिल की। यह क्रांति लगभग एक सदी पूर्व की भांति आज भी प्रेरणा का स्रोत है।

प्रथम विश्व युद्ध में रासायनिक हथियारों का भी इस्तेमाल किया गया था और दूसरे विश्व युद्ध के अंत में अमेरिका ने जापान के हिरोशिमा और नागासाकी शहरों पर परमाणु बम गिराकर, इन हथियारों की विभीषिका से दुनिया को परिचित करा दिया था। तब से लेकर आज तक साम्राज्यवादी शक्तियों के पास ऐसे जनसंहारक हथियारों के इतने जखीरे जमा हो चुके हैं जो कि मानव सभ्यता को सैकड़ों-सैकड़ों बार नष्ट कर सकते हैं। साम्रज्यवादी व्यवस्था के कायम रहते जनसंहारक हथियरों के इस जखीरे को नष्ट करना संभव नहीं है।

भले ही बीसवीं सदी की क्रांतियों और राष्ट्रीय मुक्ति युद्धों ने साम्राज्यवाद को पीछे हटने को मजबूर कर दिया और तीसरी दुनिया के देशों को सीधे गुलामी (प्रत्यक्ष औपनिवेशिक शासन) से मुक्ति मिली, लेकिन साम्राज्यवादी व्यवस्था अपने नये परिमार्जित तंत्र आर्थिक नव उपनिवेशवाद के माध्यम से आज भी कायम है। यहां यह ध्यान रखना महत्त्वपूर्ण है कि साम्राज्यवाद की इच्छा आज भी देशों की सम्प्रभुता और स्वतंत्रता को कुचलकर उन्हें सीधे अपने औपनिवेशिक प्रभुत्व के अधीन कर लेने की है। साम्राज्यवादी मुल्कों के पास मौजूद हथियारों के जखीरे इसी के लिए हैं। इराक, अफगानिस्तान, लीबिया की तबाही-बर्बादी और साम्राज्यवादी कब्ज़ा इसी की बानगी है। प्रत्यक्ष औपनिवेशिक व्यवस्था के खात्मे के बावजूद दुनिया आज भी साम्राज्यवादी मुल्कों के मध्य प्रभाव क्षेत्रों में बंटी हुई है और इन लुटेरे साम्राज्यवादियों के आपसी अंतरविरोधों की कीमत दुनिया की मज़दूर-मेहनतकश जनता को रोज़ाना अपने खून से चुकानी पड़ रही है। यूक्रेन संकट एवं अमेरिकी लठैत इजराइल द्वारा आज कल गाज़ा पट्टी पर किए जा रहे हमले इसका ताज़ा उदाहरण हैं। ऐसे में प्रथम एवं द्वितीय विश्व युद्ध की विभीषिका को याद करने का मतलब यही निकलता है कि साम्राज्यवाद के रक्तरंजित इतिहास को याद किया जाए और साम्राज्यवादी व्यवस्था के खिलाफ़ क्रांतिकारी संघर्ष को तेज़ किया जाए ।

-इंकलाबी मज़दूर केन्द्र

मज़दूर मोर्चा

नियमित रूप से हर माह की पहली व सोलह तारीख को प्राप्त करने के लिए अपने हॉकर से संपर्क करें।

कोई दिक्कत होने पर फ़रीदाबाद के पाठक शर्मा न्यूज एजेंसी से फोन नं 9811159238 पर तथा बल्लभगढ़ के पाठक अरोड़ा न्यूज़ एजेन्सी फोन नं 9811477204, करनाल के पाठक अशोक कुमार जैन, फुटवियर जवाहर मार्किट सदर बाजार से फोन नं 9896436739 पर सम्पर्क करें।